INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2019; 1(1): 04-06
Received: 06-05-2019
Accepted: 10-06-2019

Manisha
Asstt. Prof. (History)
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

Sunil
Asstt. Prof. (History)
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

Renu Sharma
Research Scholar (History)
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

Corresponding Author:
Manisha
Asstt. Prof. (History)
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

महात्मा गांधी का दर्शन

Manisha, Sunil and Renu Sharma

प्रस्तावना

मोहनदास कर्मचंद गांधी का जन्म 2 अक्टुबर 1869 को गुजरात के आधुनिक राज्य पोरबंदर में हुआ था। वह एक धनी परिवार में पैदा हुआ था और व्यापारिक और धन उधार देने वाली बनिया जाति का था। उन्होने 13 साल की उम्र कस्तुर कपाड़िया से शादी कर ली और राजकोट में पढ़ाई की। उनके पिता एक स्थानीय राजा के लिए दीवान थे और इस तरह परिवार के पास युवा गांधी को ब्रिटेन भेजने के लिए पैसा था। जहां उन्होने लंदन में कानून का अध्ययन किया था। उन्हें जून 1891 में बार में सफलता पूर्वक बुलाया गया।

गांधी जयन्ती को हर साल मोहन दास कर्मचन्द गांधी के जन्मदिवस (2 अक्टूबर, 1869) को मनाने के लिए राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है। उनका अहिंसा या सत्याग्रह आज तक राजनीतिक नेताओं और आंदोलनों को प्रभावित करता है। गांधी जयन्ती का उत्सव संयुक्त राष्ट्र द्वारा भी अहिंसा के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य उनके दर्शन, सिद्धांत का प्रसार करना और उचित शिक्षा और सार्वजनिक जागरूकता के माध्यम से अहिंसा में विश्वास करना है। एक गुजराती कारोबारी परिवार पोरबन्दर में जन्मे, उन्होने यूके में कानून का अध्ययन किया और दक्षिण अफ्रिका में कानून का अभ्यास किया। लेकिन उन्होने अपना पेशा छोड़ दिया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए स्वदेश लौट आए। अपने पूरे जीवन में उन्होने केवल उच्चत्तम नैतिक मानकों का उपयोग करते हुए हिंसा के किसी भी रूप का विरोध किया। अहिंसा के अनेक दर्शन, जिसके लिए उन्होने सत्याग्रह शब्द गढ़ा, ने आज तक राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय अहिंसक प्रतिरोध आंदोलनों को प्रभावित किया। 1918 में जब उन्होने स्वतंत्रता संग्राम का कार्यभार संभाला, उस समय से उन्हें करोड़ों भारतीयों द्वारा ''महात्मा'' के रूप में प्यार से बुलाया जाता था। आज, महात्मा गांधी द्वारा उपयोग किया जाने वाला मार्ग और साधन न केवल भारत में, बल्कि अन्य जगहों पर भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। दमन या अन्याय को संस्थागत रूप दिया गया है।

उनकी ताकत का सार सत्य में उनके विश्वास से आया था, जिसे उन्होने विभिन्न धर्मों, सभ्यताओं और मानवता की अवधारणा थी। निश्चित रूप से वर्ग, रंग, धर्म की बाधाएं अर्थहीन थी यदि कोई मानवता की एकल अवधारणा का सम्मान करता था। सत्य के बाद महात्मा गांधी एक साधक थे। उन्होने कालातीत अनुशासन के सभी प्रकार के तह के भीतर अपनी मांग को आगे बढ़ाया, जिनके जीवन और शिक्षाएं समय और स्थान की बाधाओं को पार करती हैं और मानव जाति के लिए सदा प्रासंगिक रहती है। आज दुनिया के अधिकांश देश विभिन्न प्रकार के आंतरिक और बाहरी संकटों का सामना कर रहे हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तनों के कारण विभिन्न समूहों के लोग इन मुद्दों के बारे में बहुत जागरूक हो गए हैं। कई बार एक विशेष समूह या लोगों का समूह एक समस्या पैदा करता है जो इतना गंभीर हो जाता है कि अधिकारी असहाय हो जाते हैं। कुछ महीने पहले हमने यूपी, असम और भारत के अन्य हिस्सों में ऐसी स्थिति देखी थी। ऐसे मामलों में गांधी द्वारा दिखया गया रास्ता अधिक प्रासंगिक है। यह एक तथ्य है कि अहिंसा को प्राप्त करने में कभी–कभी लंबा समय लगता है, लेकिन निश्चित रूप से यह लोगों और संपत्ति को कम नुक्सान पहुंचाता है और घृणा और बीमार इच्छाशक्ति का एक निशान नहीं छोड़ता है। अंततः अहिंसा के साथ आत्मसात किया, यह हमेशा सत्य और सत्य की जीत की खोज है।

महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जो कुछ कहा वह एक अनुकरणीय और पारदर्शी जीवन का नेतृत्व किया। जीवन के लिए उनका कोमल दृष्टिकोण इस तथ्य का प्रमाण है कि ताकत शारीरिक क्षमता के बराबर नहीं है। उनकी जीवन कहानी ने साबित किया है कि आत्मा में कोमल रहना संभव है, फिर भी एक साथ बड़ी मात्रा में शक्ति और सम्मान का आदेश देना। गांधी ने भेदभाव से लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रिका में बीस साल बिताए। उन्होने अन्याय के खिलाफ अहिंसक तरीके से अपनी अवधारणा बनाई। भारत में रहते हुए, गांधी के स्पष्ट गुण, सादगीपूर्ण जीवन शैली

और न्यूनतम पोशाक ने उन्हें लोगों के सामने ला दिया। उन्होने अपना शेष जीवन भारत से ब्रिटिश शासन को हटाने के साथ–साथ भारत के सबसे गरीब लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए लगन से काम करते हुए बिताया।

यद्यपि गांधी की स्वतंत्रता के कुछ महीनों के भीतर मृत्यु हो गई थी, यह उनका दर्शन है जिसने अपने प्रारम्भिक वर्षों के दौरान युवा राष्ट्र का मार्गदर्शन किया। अहिंसा, संयम और सरल रहन–सहन के उनके दर्शन ने भले ही हमें एक महाशक्ति होने के मार्ग पर नहीं लाया हो, लेकिन इससे हमें उन तपिशों से बचे रहने में मदद मिली। भारतीय लोकतंत्र वर्षों तक जीवित रहा और मजबूत हुआ, क्योंकि हमारे पास ऐसा कुछ था जो अन्य देशों, जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन ने नहीं किया था। हमारे पास महात्मा गांधी और उनका संदेश था, ''कि हिंसा का उत्तर हिंसा में निहित नहीं है, घृणा का मुकाबला नफरत से नही किया जाना चाहिए, नैतिक नैतिकता कायम होना चाहिए, सही अधिकार केवल सही तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है, उन्मूलन शिक्षा और प्रभावी सशक्तिकरण के माध्यम से गरीबों की गरीबी और सेवा आर्थिक नीति के प्राथमिकता वाले लक्ष्य होने चाहिए, क्योंकि सभ्यताओं में टकराव नहीं है, बल्कि विविधता, बहुलवाद और आपसी सहिष्णुता के उत्सव के लिए केवल एक दबाव की आवश्यकता है।'' देशभर में हो रहे लुभावने परिवर्तनों के बावजूद, भारत गांधीवाद दर्शन के संरक्षण में जारी है। हम गांधीवादी तरीके से एक बेहतर राष्ट्र के रूप में जीवित हैं। भारत को एक महान राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण, महात्मा गांधी अध्ययन के विषय के रूप में देश के प्रासंगिक है। ''राष्ट्रपिता'' के रूप में उनकी भूमिका हमें उनके और उनके आदर्शों से जुड़ी हर चीज पर एक नजर रखने के लिए और भी अधिक आवश्यक बना देती है।

महात्मा गांधी और उनके मूल्य आज के समाज के लिए अधिक प्रासंगिक हो गए हैं, जो उथल–पुथल और सामाजिक बुराइयाँ, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और हिंसा से पीड़ित है। महात्मा गांधी दुनिया भर में हजारों लोगों के लिए आदर्श नायक बन गए। गांधी के दर्शन के मुख्य आधार अहिंसा, दूसरों की सहिष्णुता, सभी धर्मों के प्रति सम्मान और सादा जीवन थे। यदि हम अपने चारों ओर देखें तो दुनिया विभिन्न प्रकार के संघर्षों से भरी हुई है, मुख्य रूप से लोगों में उपरोक्त सदगुणों की कमी से उत्पन्न होती है, हमारे नेताओं से अधिक। गांधी जी समझ गए थे कि भारत क्या है और यह गहरी समझ थी कि जिसने उन्हें एहसास दिलाया कि सभी प्रगति बलिदान के साथ आए हैं। वह अद्वितीय अखंडता, स्थिरता और मानवता के एक आंकड़े का प्रतिनिधित्वकरता है। अहिंसा इन महान लक्ष्यों के भौतिककरण के लिए प्राथमिक और अपरिहार्य स्थिति है। उनकी शिक्षाएँ आज भी बहुत प्रासंगिक हैं। वास्तव में, वे उस समय की आवश्यकता हैं, जिस पर विचार करते हुए ही हमारा समाज वर्तमान में चल रहा है। बहुत सारी सामाजिक बुराइयाँ हैं और उन्हें खत्म करने के द्वारा महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलना है। अहिंसा, भाईचारे और मानवता का मार्ग और निश्चित रूप से देश के लिए प्यार, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह था अपने जीवन काल के दौरान। वह अपने विश्वासों और विचारों में अपने समय से बहुत आगे था। वास्तव में, आज की दुनिया में उनके कदमों का अनुसरण करने का सही तरीका है।

आज हमारे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय, नस्लीय और धार्मिक संघर्षों को जन्म देते हुए एक दुसरे के लिए सम्मान और सहनशीलता नहीं है। हम एक–दूसरे के साथ इतने अधीर हो गए हैं कि हम शांतिपूर्ण बातचीत या तर्क के बजाय हिंसा का उपयोग करके अपने मतभेदों को हल करने की कोशिश कर रहे हैं। हम दूसरों के विचारों या भावनाओं का सम्मान नहीं करते हैं। हिंसा हमारे मतभेदों को सुलझाने का एक साधन बन जाती है, चाहे वह नस्लीय हो, धार्मिक हो या अन्य किसी भी प्रकार की हो। इसलिए पहले से कहीं ज्यादा गांधी जी की शिक्षाएं आज भी मान्य हैं। यह उनके नेतृत्व में अद्वितीय अहिंसक आंदोलन था जिसने भारत को औपनिवेशक शासन से आजादी के लिए अर्जित किया। विदेशी शासन के खिलाफ अभियान की अगुवाई करते हुए गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन की अभिनव पद्धति को अपनाया, जिसमें कई अनुकरणीय विशेषताएं थीं। उन्होने कभी भी अपने प्रतिरोध में हिंसा का सहारा नहीं लिया। यदि केवल गांधी की शिक्षाओं को हमारे नेताओं के आधुनिक दिन की सोच और नीतियों में कुछ जगह मिल सकती है। राजनीतिक, धार्मिक, कॉर्पोरेट और जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में, हम चारों ओर कम हिंसा, उदासीनता और नाखुशी देखेंगे। जब लोग बड़े पैमाने पर राजनीतिक भ्रष्ट्राचार, व्यापक राजनीतिक भ्रष्ट्राचार, सांप्रदायिक हिंसा और घृणा के समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं, तो आज गांधीजी का अहिंसा का सुसमाचार काफी मायने रखता है।

अहिंसा की गांधी की वकालत, अंत और साधनों के प्रति उनके दृष्टिकोण से निकटता से जुड़ी हुई है। उनका मानना था कि एक वांछित सामाजिक परिणाम प्राप्त करने के लिए हिंसक तरीकों से अनिवार्य रूप से हिंसा बढ़ेगी। प्राप्त किया गया अंत हमेशा इस्तेमाल किए गए तरिकों से दूषित होगा। वह लियो टॉल्स्टॉय से प्रभावित थे, जिनके साथ उन्होने कई पत्रों का आदान–प्रदान किया और उन्होने बदले में मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला को प्रभावित किया। और अब म्यांमार में औंग सा सन सू की, जो महात्मा गांधी की निरंतर प्रासंगिकता का प्रमाण है।

महात्मा गांधी जी मानते थे कि उनके मूल में सभी धर्म, सत्य, प्रेम, करूणा, अहिंसा और स्वर्णिम नियम की अवधारणाओं पर आधारित हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या वे हिंदु हैं, तो गांधी ने जवाब दिया कि हाँ मैं हिंदु हूँ, मैं एक ईसाई, एक मुस्लिम, एक बौद्ध और एक यहूदी भी हूँ। भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के अपने प्रयासों में सबसे गंभीर समस्याओं में से एक, समुदायों के बीच घृणा और अविश्वास, यहाँ तक कि नफरत भी थी। गांधी ने मतभेदों को पाटने और एकता और सदभाव बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया। इस समस्या से उनके संघर्ष आज हमारे लिए अत्यधिक प्रासंगिक है, जब दुनिया धार्मिक और जातीय मतभेदों से विभाजित है।

यह बहुत बड़ी त्रासदी है कि हमारे देश में अभी भी जातिवाद, लैंगिक भेदभाव और सांप्रदायिकता बनी हुई है, जैसा कि हम इस गांधी के जन्म की 150 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए मनाते है, उनके विचार–उत्तेजक हमारे दैनिक जीवन के लिए वास्तविकता बन जाता है। गांधी ने कहा,''मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। हमें वह परिवर्तन बनना चाहिए जिसे दुनिया देखना चाहती है। एक आँख के लिए एक आँख ही पूरी दुनिया को अंधा बना देगी।'' गांधी जी ने सिंद्धातों के बिना राजनीति, बिना काम के धन, खुशी के बारे में कहा है। विवेक के बिना, चरित्र के बिना, ज्ञान, नैतिकता के बिना वाणिज्य, मानवता के बिना विज्ञान, और बलिदान के बिना पूजा। यदि केवल लोग यह कहकर सरलता से कह सकते हैं कि दुनिया को जीने के लिए बेहतर होगी, गांधी जी के सिद्धांत विशुद्ध रूप से सिद्धांत पर आधारित नहीं था। इसके बजाय, वह व्यावहारिकता के नियमों से रहता था। उसने अपने जीवन के हर दिन का उपदेश दिया। उस दुनिया में, जिसमें प्रामणिकता नेतृत्व पर अधिकार होता है, मेरा मानना है कि हमें उस व्यक्ति से बहुत कुछ सीखना है जिसने अपने राष्ट्र के लिए संघर्ष किया।

संदर्भ सूची

1. अरोड़ा, ए.सी.: भारत का इतिहास, प्रदीप पब्लिकेशन, 2009

2. चन्द्र, विपिन : आधुनिक भारत का इतिहास, आरियंट ब्लैकस्वॉन
3. सरकार, सुमित : आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन
4. पाणि, नरेन्द्र : समावेशी अर्थशास्त्र : गांधीवादी पद्धति और समकालीन नीति, साधु
5. प्रकाशन प्रा.लि., 2002
6. शर्मा, रश्मि : गांधीवादी अर्थशास्त्र : एक मानवीय दृष्टिकोण, दीप और दीप प्रकाशन प्रा.लि., 1997